

सारांश

मानव सभ्यता के विकास के क्रम में प्रत्येक समाज और परिवेश में प्रेम तत्त्व अवश्य विद्यमान रहा है। प्रेम भाव के द्वारा ही व्यक्ति में समाजिकता की भावना का विकास हुआ है। प्रेम ही व्यक्ति के 'मैं' की भावना का 'हम' की भावना में विकास करता है। प्रेम केवल एक अवधारणा ही नहीं है अपितु प्रेम मानव जीवन का शाश्वत सत्य है। हिंदी साहित्य में भी आरंभ से ही प्रेम भाव का चित्रण विभिन्न रूपों में हुआ है। अपने लगभग सौ वर्षों के लेखन काल में कहानी विधा में अनेक परिवर्तन दृष्टिगत होते हैं। ये परिवर्तन कथ्य एवं शिल्प दोनों ही स्तरों पर दृष्टिगोचर होते हैं। हिंदी कहानी का मूलभाव भी युग, परिस्थितियों के अनुसार बदल गया है।

हिंदी कहानी का विषय-क्षेत्र लगभग सभी अनुशासनो से रहा है, जिसका प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष संबंध समाज से जुड़ा हुआ है। सामाजिक परिस्थितियों तथा विभिन्न साहित्यिक आंदोलनों के कारण कहानी के भाव एवं शिल्प पक्ष अवश्य परिवर्तित हुए लेकिन प्रेम तत्त्व प्रत्येक दशक की कहानी में विद्यमान अवश्य रहा है। हिंदी कहानी के आरंभिक समय में आदर्श प्रेम को केंद्र में रखकर कहानियाँ लिखी गईं। ऐसी प्रेम कहानियाँ जिनमें प्रेम का अर्थ पाना नहीं अपितु त्याग और बलिदान करना है। ऐसा प्रेम जिसमें संयोग की अपेक्षा वियोग पक्ष को अधिक महत्त्व दिया जाता है। गुलेरी कृत 'उसने कहा था', प्रसाद जी कृत 'आकाशदीप' और जैनेन्द्र कृत 'जाह्नवी' ऐसी ही आदर्श प्रेम की कहानियाँ हैं। इन कहानियों में प्रेम के उद्दत स्वरूप का चित्रण किया गया है। इन कहानियों में प्रेम बलिदान, त्याग और प्रतीक्षा के आदर्श रूप में चित्रित हुआ है। ऐसा प्रेम जिसमें संयोग की अपेक्षा वियोग पक्ष को अधिक महत्त्व दिया जाता है। स्वतंत्रता के पश्चात विभिन्न कहानी आंदोलनों के प्रभाव में लिखी गई कहानियों में भी प्रेम की झलक साफ़ दिखाई देती है, परंतु परिस्थितियों के अनुसार प्रेम का स्वरूप परिवर्तित होता हुआ दिखाई पड़ता है। कहीं प्रेम लोक से जुड़ा हुआ परिलक्षित हुआ है जिसमें व्यक्तिगत प्रेम भाव से अधिक लोक और समाज को महत्त्व दिया गया है। रेणु जी की 'तीसरी कसम', शेखर जोशी जी की 'कोसी का घटवार' ऐसी ही प्रेम कहानियाँ हैं। वहीं दूसरी ओर कमलेश्वर जी की

‘नीली झील’ कहानी में अपने निजी प्रेम का विस्तार ही लोक तक किया गया। अपने व्यक्तिगत प्रेम को समाज और प्रकृति से जोड़ने का कार्य इस कहानी के माध्यम से किया गया। रांगेय राघव जी की कहानी ‘गदल’ अपने समय की अन्य प्रेम कहानियों से भिन्न प्रतीत होती है। इस कहानी में प्रेम में प्रतिशोध की भावना और साथ ही प्रेम के लिए आत्मबलिदान कर देने की भावना का भी चित्रण किया गया है।

कहानियों के विकासक्रम में नई कहानी आंदोलन के फलस्वरूप चित्रित प्रेम में भी यथार्थ परिस्थितियों का प्रभाव पड़ा। अब प्रेम के सामाजिक पक्ष से अधिक महत्त्वपूर्ण उसके व्यक्तिगत या मानसिक पक्ष को माना गया। प्रेम व्यक्ति के निजी, ऐंद्रिय भाव के रूप में अधिक प्रतिष्ठित हो गया। अपनी यथार्थ परिस्थितियों के अनुसार व्यक्ति अपने प्रेम का वरण करने को पूर्ण स्वतंत्र हो गया। नई कहानी आंदोलन की हस्ताक्षर कहानी निर्मल वर्मा जी की ‘परिदे’ कहानी है। इस कहानी में जीवन की यथार्थ समस्या को सामने रखा गया है। पूर्व के प्रेम और वर्तमान के प्रेम के मध्य द्वंद्व की स्थिति हमें ‘परिदे’ और मन्नू भंडारी जी की कहानी ‘यही सच है’ में दिखलाई पड़ती है। इसके विपरीत रवींद्र कालिया जी की कहानी ‘तीस साल बाद’ प्रेम का भावुकतामुक्त आत्मीय स्मरण मात्र है।

विभिन्न विमर्शों और सामाजिक आंदोलनों के परिप्रेक्ष्य में मृदुला गर्ग द्वारा लिखी गई ‘मीरा नाची’ और नीलाक्षी सिंह द्वारा लिखी गयी ‘रंगमहल में नाची राधा’ दोनों ही प्रेम कहानियाँ प्रेम के माध्यम से स्त्री मुक्ति के प्रसंगों को उठाती है। दोनों ही कहानियों में स्त्री को विभिन्न रूढ़िगत बंधनों से मुक्त करके उसे एक नवीन दिशा, जीवन का विस्तार करने के नवीन अवसर प्रदान करने वाले प्रेम का चित्रण किया गया है। भूमंडलीकृत समय में जब व्यक्ति के लिए जीवन जीने के आदर्श ही परिवर्तित हो गए हैं उसके मूल्य बदल गए हैं तो ऐसी स्थिति का प्रभाव प्रेम पर भी दिखलाई देता है। वर्तमान समय में प्रेम में पूर्व की भाँति बलिदान, त्याग और आदर्श स्थितियाँ नहीं दिखलाई पड़ती हैं ना ही किसी प्रकार के संकोच और लोक मर्यादा की भावना ही वर्तमान युग के प्रेम भाव में रह गई है। आज के युग में प्रेम त्याग नहीं अपितु हासिल करने या पाने के रूप में दिखाई देता है। सुषमा मुनीन्द्र की

कहानी 'डसो मगर प्यार से' में भी प्रेम केवल जीवन में आगे बढ़ने की सीढ़ी के रूप में ही प्रयुक्त होता है।

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि 'उसने कहा था' से लेकर 'डसो मगर प्यार से' तक की हिंदी कहानी की यात्रा में प्रेम भिन्न-भिन्न युगों, परिस्थितियों के अनुसार भिन्न-भिन्न रूपों में अभिव्यक्त हुआ है। कहीं इसमें प्रेम के लिए खुद को बलिदान कर देने का भाव है तो कहीं खुद के लिए प्रेम का ही बलिदान कर देने का भाव दिखाई पड़ने लगा है। हम कह सकते हैं कि समय, परिस्थितियों और परिवेशों के बदलाव के फलस्वरूप प्रेम के रूप में भी भिन्नता अवश्य आ गयी है परंतु प्रेम साहित्य या समाज से स्थगित नहीं हुआ है।